भारतीय ज्योतिष फलित

परिचय-पाठ्यक्रम

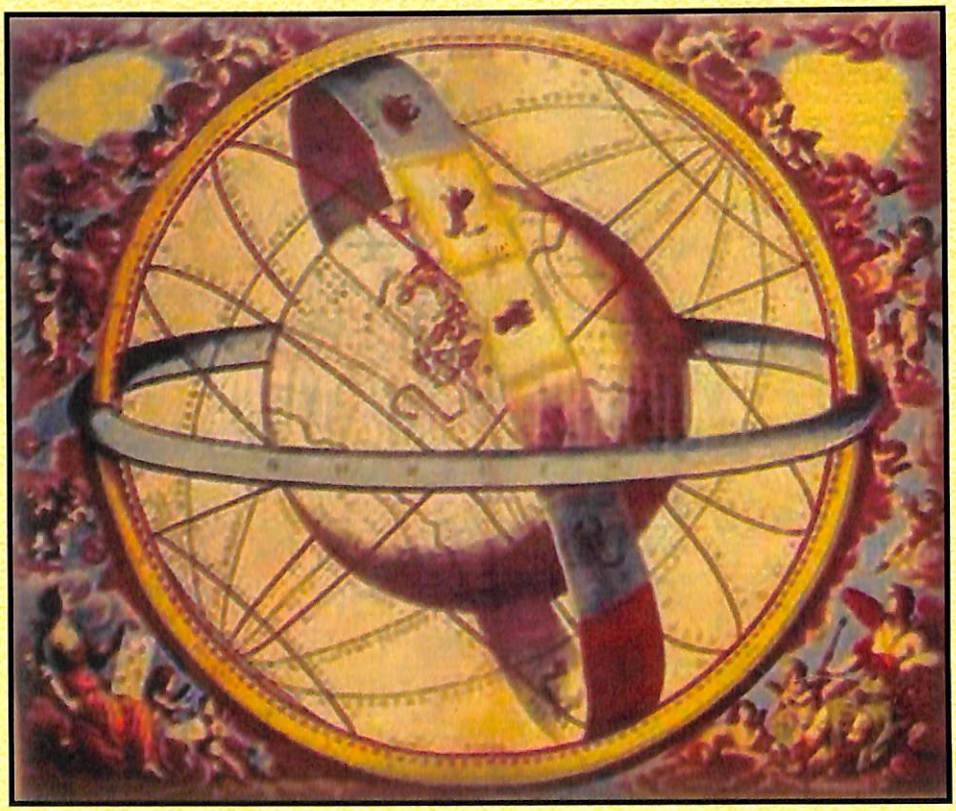

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(भारतशासन-मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः,
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्यायितः समविश्वविद्यालयः)

नवदेहली

भारतीय ज्योतिष

फलित

परिचय-पाठ्यक्रम

प्रधानं सम्पादक

प्रो० परमेश्वर नारायण शास्त्री

सम्पादक

प्रो० सर्वनारायण झा

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासन-मानवसंसाधनविकास-मन्त्रालयाधीनम्)

नवदेहली

सम्पादकीय

ब्रह्माण्ड के सभी चराचर प्राणियों में पञ्च महाभूत[1] सप्त धातु[2] और तीनों गुण[3] ग्रह नक्षत्र आदि के ज्योति के प्रभाव से होते हैं।

जन्म काल में ग्रह आदि की जैसी स्थिति रहती है, तदनुसार उस जातक में उपरिलिखित तत्त्व धातु तथा गुण आदि की मात्रा भी विद्यमान रहती है। यही कारण है कि किसी प्राणी में पार्थिवांश अधिक होता है, किसी में जलांश विशेष रहता है तो कहीं अग्नि का भाग अधिक। किसी जातक में वायु तत्त्व की अधिकता तो किसी में आकाश तत्त्व की। इसी प्रकार जन्मकाल में सत्त्वगुण सम्पन्न ग्रह (सूर्य, चन्द्र, गुरू) के अतिशय प्रभाव से जातक में सत्त्वगुण की मात्रा अधिक रहती है, रजोगुण सम्पन्न ग्रह (बुध, शुक्र) से रजोगुण और तमोगुण सम्पन्न ग्रह (शनि, मंगल) के अतिशय प्रभाव से तमोगुण की मात्रा अधिक रहती है।[4]

जहाँ रवि और मंगल जातक को भौतिक रूप से पित्त प्रकृति का बनाते हैं, शनि और राहु वात (वायु) प्रकृति का, गुरू कफ प्रकृति का, चन्द्र और शुक्र वात और कफ दोनों ही प्रकृति का, वहीं अकेला बुध कफ, वात और पित्त तीनों ही प्रकृति प्रदान करता है। इसीलिए कोई जातक कफ से पीड़ित, कोई वात पीड़ित तो कोई पित्त पीड़ित हो जाता है। ऐसा ग्रह योगबल के प्रभाव से ही हुआ करता है।[5]

---

1. पञ्चमहाभूत– Primordial Compounds आकाश– Ether, वायु– Air, अग्नि– Fire, जल– Water, भूमि– Earth,
   अग्निभूमिनभस्तोयवायवः क्रमतो द्विज।
   भौमादीनां ग्रहाणाञ्च तत्त्वानीति यथाक्रमम्।।
   बृहत्पाराशर होराशास्त्र, ग्रहगुणस्वरूपाध्याय– श्लो. 20

2. सप्तधातु– Primari ingredients : अस्थि– Bones रक्त– Blood मज्जा– Marrow,
   त्वचा–Skin वसा– Fat वीर्य– Semen.
   अस्थि रक्तस्तथा मज्जा त्वग् वसा वीर्यमेव च।
   स्नायुरेषामधीशाश्च क्रमात् सूर्यादयो द्विज।।
   बृहत्पारा. ग्रहगुण– श्लो. 31

3. तीन गुण (सत्त्व, रज, तम)
   जीवसूर्येन्दवः सत्त्वं बुधशुक्रौ रजस्तथा।
   सूर्यपुत्रधरापुत्रौ तमः प्रकृतिकौ द्विज।।
   बृहत्पाराशर, ग्रहगुणस्वरूपाध्याय– श्लो. 22

4. गुरुशशिरवयः सत्त्वं रजः सितज्ञौ तमोऽर्कसुतभौमौ।
   एतेऽन्तरात्मनः स्वां प्रकृतिं जन्तोः प्रयच्छन्ति।।
   लघुजातकम्, सूतिकाध्यायः, श्लो.1

5. बृहत्पाराशर०, ग्रहगुणस्वरूप०, श्लो. 23–30,

विषय–सूची

	सम्पादकीय		*i-v*
इकाई–1	**ज्योतिष शास्त्र एक परिचय**		**1–10**
	प्रस्तावना		2
	प्रयोजन		2
	1.1	ज्योतिष शास्त्र एक वेदाङ्ग	2–3
	1.2	स्कन्ध विभाग	3
	1.3	ज्योतिष शास्त्र प्रवर्तक	3–5
	1.4	आचार्य परम्परा	5–9
		1.4.1 वैदिक काल	5
		1.4.2 वेदाङ्ग काल	6
		1.4.3 सिद्धान्त काल	6–8
		1.4.4 आधुनिक काल	8–9
		1.4.5 वर्तमान काल	9
	अभ्यास		10
	उत्तरमाला		10
इकाई–2	**काल परिचय**		**11–28**
	प्रस्तावना		13
	2.0	काल	13
	2.1	स्थूल काल (मूर्त काल)	13–14
	2.2	सूक्ष्म काल (अमूर्त काल)	14–15
	2.3	दिन	15
	2.4	अहोरात्र	15
	2.5	तिथि वृद्धि एवं क्षय	15–18
	2.6.0	मास	18
		2.6.1 सौर मास	18
		2.6.2 सौर दिन	18
		2.6.3 संक्रान्ति	18
	चान्द्र मास		18

9. अमान्त में।
10. सूर्य।
11. संक्रान्ति से विहीन चान्द्रमास को अधिमास कहते हैं।
12. 5 दिन, 15 घं., 11 मि., 56 सेकण्ड।
13. एक राशि।
14. 60 संवत्सर हैं और सृष्ट्यादि में विजय संवत्सर था।

पारिभाषिक–शब्दावली

1. राशि = नक्षत्र के नौ चरण समूह को राशि कहते हैं। ये बारह होते हैं। मेष, वृष, मिथुन आदि।
2. सौर = सूर यानी सूर्य से सम्बन्धित।
3. शुक्लपक्ष = जिस पक्ष में चन्द्रमा का शुक्ल भाग बढ़ते क्रम में होता है उसे शुक्ल पक्ष कहते हैं।
4. कृष्णपक्ष = जिस पक्ष में चन्द्रमा का कृष्ण भाग बढ़ते क्रम में होता है।
5. नाक्षत्रकाल = नियत समय के द्योतक काल को नाक्षत्रकाल कहते हैं। जैसे – घटी, पल, विपल आदि अथवा घंटा, मिनट, सेकेण्ड नाक्षत्र काल है।
6. भगण = राशिमाला को भगण कहते हैं या आकाश मण्डल में जो बारहों राशियों का समूह है उसे भगण कहते हैं। इसी राशि मण्डल का (12 राशियों का) जब कोई ग्रह एक बार पूरा भोग कर लेता है तो वह उस ग्रह का एक भगण कहलाता है।
7. अहर्गण = सृष्ट्यारम्भ से वर्तमान समय तक के सावन दिनों की संख्या को अहर्गण कहते हैं।
8. कदम्बतारा = ध्रुवतारा के पास 24 अंश हटकर एक तारा है जो ध्रुवतारा के चारों ओर चक्कर लगाता है, उसे कदम्ब तारा कहते हैं।
9. कदम्बप्रोतवृत्त = आकाश में स्थित किसी भी विम्ब या स्थान पर कदम्बतारा से गया हुआ ऐसा वृत्त जिसका केन्द्र भू केन्द्र हो, कदम्बप्रोतवृत्त कहलाता है।
10. तीव्रगतिक = जो तेज चले।
11. अमान्त = अमावास्या तिथि का अन्तिम क्षण।
12. दर्श = अमावास्या का ही दूसरा नाम दर्श है।
13. संक्रमण = एक राशि से दूसरे राशि में सूर्य का प्रवेश करना संक्रमण कहलाता है।

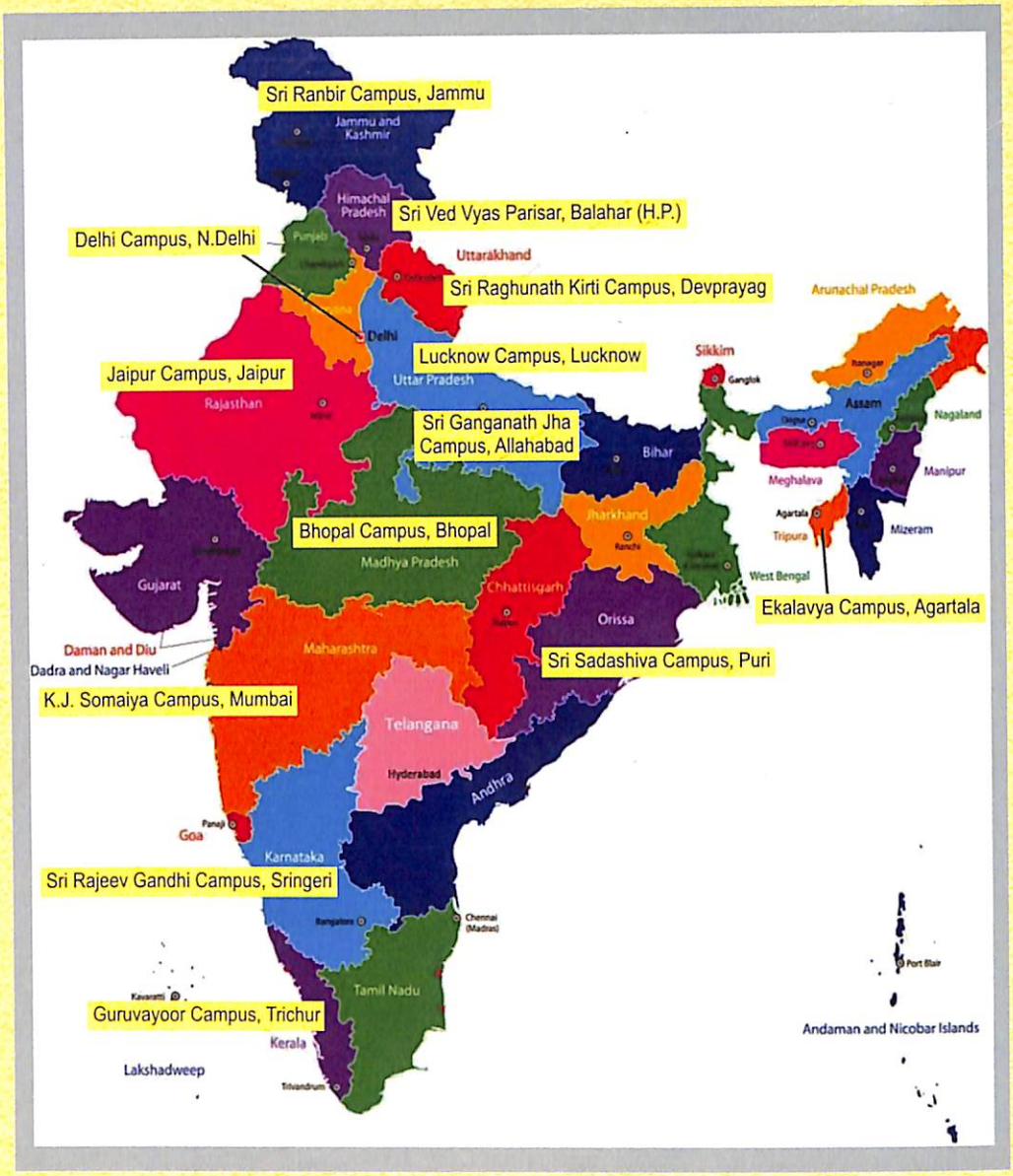

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(भारतशासन-मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः,
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्यायितः मानितविश्वविद्यालयः)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058

दूरभाष : 011-28524993, 28521994, 28520977

email : rsks@nda.vsnl.net.in
website : www.sanskrit.nic.in